बाज़ार संतुलन

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» संतुलन, अधिमाँग और अधिपूर्ति

प्रश्न 1 (आसान). अगर किसी कीमत पर बाज़ार में 100 शर्ट की माँग है और 100 शर्ट की ही पूर्ति है, तो यह कौन सी स्थिति है?

उत्तर – संतुलन

प्रश्न 2 (आसान). अगर ₹50 में 20 पेन बिक रहे हैं और लोग 30 पेन खरीदना चाहते हैं, तो यह क्या है?

उत्तर – अधिमाँग

प्रश्न 3 (मध्यम). एक त्योहार पर मिठाई की दुकानों पर लोग बहुत ज़्यादा मिठाई खरीदने आ रहे हैं, लेकिन दुकानदारों के पास इतनी मिठाई नहीं है। इस बाज़ार स्थिति को क्या कहेंगे?

उत्तर – अधिमाँग

प्रश्न 4 (कठिन). अगर सरकार किसानों को किसी अनाज के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) देती है जो बाज़ार मूल्य से ज़्यादा है, तो बाज़ार में किस स्थिति के उत्पन्न होने की संभावना है?

उत्तर – अधिपूर्ति (क्योंकि ज़्यादा कीमत पर किसान ज़्यादा बेचना चाहेंगे, पर खरीददार कम होंगे)

» स्थिर फर्मों की संख्या में बाजार संतुलन

प्रश्न 5 (आसान). यदि माँग वक्र qD = 100 - P और पूर्ति वक्र qS = 20 + P हो, तो संतुलन कीमत क्या होगी?

उत्तर – $P_* = 40$

प्रश्न 6 (आसान). ऊपर दिए गए प्रश्न में संतुलन मात्रा क्या होगी?

उत्तर – $Q_* = 60$

प्रश्न 7 (मध्यम). यदि किसी वस्तु की बाज़ार कीमत संतुलन कीमत से अधिक है, तो बाज़ार में अधिमाँग होगी या अधिपूर्ति?

उत्तर – अधिपूर्ति (Excess Supply)

प्रश्न 8 (कठिन). यदि किसी बाज़ार में माँग वक्र qD = 300 - 2P और पूर्ति वक्र qS = 50 + 3P है। संतुलन कीमत और मात्रा ज्ञात करें।

उत्तर – $P_* = 50$, $Q_* = 200$

» माँग में बदलाव और संतुलन पर इसका प्रभाव (स्थिर फर्मों के साथ)

प्रश्न 9 (आसान). अगर लोगों को अचानक लगने लगे कि 'स्मार्टफोन' अब आउटडेटेड हो रहे हैं, तो उनकी माँग वक्र किस तरफ खिसकेगा?

उत्तर – बायीं ओर

प्रश्न 10 (आसान). माँग बढ़ने पर संतुलन कीमत पर क्या असर पड़ता है?

उत्तर – संतुलन कीमत बढ़ती है।

प्रश्न 11 (मध्यम). सरकार अगर चीनी पर सब्सिडी हटा दे, तो क्या माँग वक्र खिसकेगा या पूर्ति वक्र? संतुलन पर क्या असर पड़ेगा?

उत्तर – अगर सब्सिडी हटी, तो चीनी महंगी हो जाएगी, तो माँग तो खिसकेगी नहीं, हाँ, पूर्ति वक्र खिसकेगा (बाईं ओर)। पर अगर आप सिर्फ माँग की बात कर रहे हैं, तो चीनी महंगी होने से लोगों की खरीदने की शक्ति कम होगी, या कुछ लोग मीठा कम खाने लगेंगे। यह माँग को 'घटा' सकता है (curve shift left), पर मुख्यतः यह कीमत के जरिए काम करता है।

प्रश्न 12 (कठिन). माँग में वृद्धि के कारण बाज़ार में अधिमाँग की स्थिति क्यों बनती है और यह संतुलन को कैसे प्रभावित करती है?
उत्तर – माँग में वृद्धि होने पर, पुरानी संतुलन कीमत पर लोग पहले से ज़्यादा वस्तु खरीदना चाहते हैं, जबकि विक्रेता उतनी ही वस्तु बेचना चाहते हैं जितनी पहले बेचते थे। इससे माँग ज़्यादा और पूर्ति कम हो जाती है, जिसे अधिमाँग कहते हैं। इस अधिमाँग के कारण कुछ खरीदार ज़्यादा कीमत देने को तैयार हो जाते हैं, जिससे कीमत बढ़ने लगती है। कीमत बढ़ने से विक्रेता ज़्यादा वस्तुएँ बेचने को तैयार होते हैं और खरीदार थोड़ी कम वस्तुएँ खरीदते हैं, और अंततः एक नई, ऊँची कीमत पर नया संतुलन बनता है जहाँ कीमत और मात्रा दोनों बढ़ जाती हैं।

» पूर्ति में बदलाव और संतुलन पर इसका प्रभाव (स्थिर फर्मों के साथ)

प्रश्न 13 (आसान). अगर किसी फल की फसल खराब हो जाए तो बाज़ार में उसकी पूर्ति ___________ (बढ़ेगी/घटेगी)।
उत्तर – घटेगी

प्रश्न 14 (आसान). पूर्ति बढ़ने पर संतुलन कीमत _____________ (बढ़ती है/घटती है)।
उत्तर – घटती है

प्रश्न 15 (मध्यम). त्योहारों से पहले मिठाई बनाने के कच्चे माल (जैसे चीनी) के दाम बढ़ जाते हैं। इससे मिठाई के बाज़ार संतुलन पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – मिठाई बनाने का खर्च बढ़ने से उसकी पूर्ति घटेगी, जिससे संतुलन कीमत बढ़ेगी और संतुलन मात्रा घटेगी।

प्रश्न 16 (कठिन). सरकार ने प्लास्टिक के खिलौनों के उत्पादन पर सब्सिडी दे दी है। इससे खिलौनों के बाज़ार संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? माँग वक्र को स्थिर मानें।
उत्तर – सब्सिडी से उत्पादन लागत कम होगी, जिससे प्लास्टिक के खिलौनों की पूर्ति बढ़ेगी। पूर्ति वक्र दाएँ खिसकेगा, संतुलन कीमत घटेगी और संतुलन मात्रा बढ़ेगी।

» माँग और पूर्ति का एक साथ बदलाव

प्रश्न 17 (आसान). अगर माँगी गई मात्रा और बेची गई मात्रा दोनों में एक साथ कमी आती है, तो संतुलन मात्रा पर क्या असर होगा?
उत्तर – संतुलन मात्रा निश्चित रूप से घट जाएगी।

प्रश्न 18 (आसान). अगर बाज़ार में किसी वस्तु की माँग बढ़ जाती है और पूर्ति भी बढ़ जाती है, तो संतुलन मात्रा हमेशा _____ होगी।
उत्तर – बढ़ेगी

प्रश्न 19 (मध्यम). एक त्योहार के कारण साड़ी की माँग बहुत बढ़ गई (माँग में बड़ी वृद्धि)। साथ ही, मिल में हड़ताल के कारण साड़ियों का उत्पादन बहुत घट गया (पूर्ति में बड़ी कमी)। संतुलन कीमत और मात्रा पर क्या असर होगा?
उत्तर – संतुलन कीमत निश्चित रूप से बढ़ जाएगी। संतुलन मात्रा पर असर अनिश्चित है (बढ़ सकती है, घट सकती है या वही रह सकती है), यह इस बात पर निर्भर करेगा कि माँग में वृद्धि ज़्यादा हुई या पूर्ति में कमी ज़्यादा हुई।

प्रश्न 20 (कठिन). किसी कृषि उत्पाद के लिए सरकार ने सब्सिडी बढ़ा दी (जिससे पूर्ति दायीं ओर खिसकी) और साथ ही, लोगों की आय में वृद्धि के कारण उसकी माँग भी बढ़ गई (माँग दायीं ओर खिसकी)। यदि माँग और पूर्ति में बराबर-बराबर वृद्धि होती है, तो संतुलन कीमत और मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – संतुलन कीमत अपरिवर्तित रहेगी, और संतुलन मात्रा बढ़ जाएगी।

» श्रम बाजार में मजदूरी निर्धारण

प्रश्न 21 (आसान). श्रम बाजार में 'श्रम की पूर्ति' कौन करता है?
उत्तर – घर-परिवार या श्रमिक।

प्रश्न 22 (आसान). यदि श्रम की माँग बढ़ जाए और पूर्ति स्थिर रहे, तो मजदूरी पर क्या असर होगा?
उत्तर – मजदूरी बढ़ जाएगी।

प्रश्न 23 (मध्यम). एक काल्पनिक श्रम बाजार में, यदि माँग वक्र DL = 80 - 4W और पूर्ति वक्र SL = 6W है, तो संतुलन मजदूरी दर क्या होगी?
उत्तर – W = 8

प्रश्न 24 (कठिन). क्या होगा यदि मज़दूरों की शिक्षा का स्तर बढ़ जाए? श्रम की माँग और पूर्ति वक्रों पर इसका क्या असर होगा, और मजदूरी पर अंतिम प्रभाव क्या होगा?
उत्तर – शिक्षा का स्तर बढ़ने से श्रमिकों की कार्यक्षमता बढ़ती है, जिससे 'श्रम की पूर्ति' (SL) में सुधार आ सकता है (वक्र दाईं ओर शिफ्ट होगा) और फर्में ऐसे कुशल श्रमिकों की 'माँग' भी बढ़ा सकती हैं (DL भी दाईं ओर शिफ्ट होगा)। अंतिम मजदूरी दर इन दोनों बदलावों की सापेक्ष शक्ति पर निर्भर करेगी, लेकिन आमतौर पर कुशल श्रमिकों के लिए मजदूरी बढ़ती है।

» बाजार संतुलन: निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन

प्रश्न 25 (आसान). अगर किसी बाज़ार में फर्मों को निर्बाध प्रवेश और बहिर्गमन की अनुमति है और मौजूदा बाज़ार कीमत ₹50 है, जबकि फर्मों की न्यूनतम औसत लागत ₹40 है, तो क्या होगा?
उत्तर – नई फर्मों को लाभ कमाने की उम्मीद होगी, इसलिए वे बाज़ार में प्रवेश करेंगी, जिससे पूर्ति बढ़ेगी और कीमत कम होकर ₹40 पर आ जाएगी।

प्रश्न 26 (आसान). एक बाज़ार जहाँ निर्बाध प्रवेश और बहिर्गमन है, वहाँ संतुलन की स्थिति में कोई भी फर्म अधिसामान्य लाभ क्यों नहीं कमा सकती?
उत्तर – क्योंकि अगर कोई फर्म अधिसामान्य लाभ कमाती है, तो नई फर्म आकर्षित होकर बाज़ार में आ जाती हैं, जिससे लाभ फिर सामान्य स्तर पर आ जाता है।

प्रश्न 27 (मध्यम). अगर फर्मों की न्यूनतम औसत लागत ₹30 है, और बाज़ार कीमत ₹35 है, तो क्या कोई फर्म बाज़ार छोड़ कर जाएगी? क्यों?
उत्तर – नहीं, कोई फर्म बाज़ार छोड़कर नहीं जाएगी क्योंकि वे अभी भी सामान्य से ज़्यादा लाभ कमा रही हैं (₹35 > ₹30)। बल्कि नई फर्म आ सकती हैं।

प्रश्न 28 (कठिन). निर्बाध प्रवेश और बहिर्गमन वाले बाज़ार में, संतुलन कीमत और फर्मों की न्यूनतम औसत लागत के बीच क्या संबंध होता है? विस्तृत में समझाओ।
उत्तर – इस बाज़ार में संतुलन कीमत हमेशा फर्मों की न्यूनतम औसत लागत के बराबर होती है। अगर कीमत न्यूनतम औसत लागत से ज़्यादा होगी, तो फर्म अधिसामान्य लाभ कमाएंगी, जिससे नई फर्म आकर्षित होकर बाज़ार में आएंगी। पूर्ति बढ़ेगी और कीमत गिरकर न्यूनतम औसत लागत के बराबर हो जाएगी। इसके उलट, अगर कीमत न्यूनतम औसत लागत से कम होगी, तो फर्मों को नुकसान होगा और कुछ फर्म बाज़ार छोड़कर चली जाएंगी। पूर्ति कम होगी और कीमत बढ़कर फिर न्यूनतम औसत लागत के बराबर हो जाएगी। इस तरह, बाज़ार हमेशा खुद को इस स्तर पर समायोजित करता है कि कोई अधिसामान्य लाभ या हानि न हो, और कीमत न्यूनतम औसत लागत के बराबर हो जाए।

» माँग में बदलाव और संतुलन पर इसका प्रभाव (निर्बाध प्रवेश/निकास के साथ)

प्रश्न 29 (आसान). अगर बाज़ार में निर्बाध प्रवेश/निकास हो और किसी वस्तु की माँग बढ़ जाए, तो शुरुआत में कीमत पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – शुरुआत में कीमत बढ़ेगी।

प्रश्न 30 (आसान). माँग बढ़ने पर, निर्बाध प्रवेश/निकास वाले बाज़ार में, फ़र्मों की संख्या पर क्या असर पड़ेगा?
उत्तर – फ़र्मों की संख्या बढ़ जाएगी।

प्रश्न 31 (मध्यम). निर्बाध प्रवेश/निकास के साथ एक बाज़ार में, यदि किसी वस्तु की माँग में कमी आती है, तो संतुलन कीमत और मात्रा पर अंतिम रूप से क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – संतुलन कीमत प्रारंभिक स्तर पर वापस आ जाएगी, और संतुलन मात्रा घट जाएगी।

प्रश्न 32 (कठिन). एक बाज़ार में जहाँ फ़र्मों का निर्बाध प्रवेश और निकास संभव है, अगर सरकार उत्पाद शुल्क (excise duty) बढ़ा दे, तो माँग में बदलाव के साथ संतुलन पर इसका संयुक्त प्रभाव कैसे दिखेगा?
उत्तर – उत्पाद शुल्क बढ़ने से पूर्ति वक्र बायीं ओर खिसकेगा। अगर माँग भी बढ़ती है, तो कीमत पर दो विपरीत प्रभाव पड़ेंगे। निर्बाध प्रवेश/निकास के कारण, कीमत लंबे समय में स्थिर होगी, लेकिन मात्रा पर असर दोनों के सापेक्षिक शक्ति पर निर्भर करेगा। अगर माँग बढ़ेगी तो फ़र्में बढ़ेंगी और शुल्क का प्रभाव कीमत के बजाय लाभ और मात्रा पर अधिक दिखेगा।

» सरकारी हस्तक्षेप: उच्चतम निर्धारित कीमत

प्रश्न 33 (आसान). उच्चतम निर्धारित कीमत कौन तय करता है?
उत्तर – सरकार

प्रश्न 34 (आसान). यह कीमत बाज़ार संतुलन कीमत से __________ होती है। (भरें)
उत्तर – कम

प्रश्न 35 (मध्यम). उच्चतम निर्धारित कीमत का मुख्य उद्देश्य क्या है?
उत्तर – आवश्यक वस्तुओं को सभी उपभोक्ताओं, खासकर गरीबों के लिए किफायती बनाना।

प्रश्न 36 (कठिन). उच्चतम निर्धारित कीमत तय करने से बाज़ार में आमतौर पर कौन-सी स्थिति बनती है? और इसके दो संभावित नकारात्मक परिणाम क्या हो सकते हैं?
उत्तर – आमतौर पर 'अधिमाँग' (माँग ज़्यादा, पूर्ति कम) की स्थिति बनती है। इसके नकारात्मक परिणाम लंबी कतारें (राशन दुकानों पर) और कालाबाज़ारी हो सकते हैं।

» सरकारी हस्तक्षेप: निम्नतम निर्धारित कीमत

प्रश्न 37 (आसान). निम्नतम निर्धारित कीमत हमेशा बाज़ार संतुलन कीमत से _______ होती है। (कम/ज़्यादा)
उत्तर – ज़्यादा

प्रश्न 38 (आसान). निम्नतम निर्धारित कीमत का मुख्य उद्देश्य किसे लाभ पहुँचाना है? (उपभोक्ता/उत्पादक)
उत्तर – उत्पादक

प्रश्न 39 (मध्यम). जब सरकार निम्नतम निर्धारित कीमत तय करती है, तो बाज़ार में किस स्थिति का सामना करना पड़ सकता है? (अधिमाँग/अधिपूर्ति)
उत्तर – अधिपूर्ति

प्रश्न 40 (कठिन). यदि सरकार ने किसी अनाज के लिए निम्नतम निर्धारित कीमत तय की है, और बाज़ार में उस अनाज की अच्छी फसल के कारण बहुत ज़्यादा पैदावार हो गई है, तो सरकार को इस स्थिति को संभालने के लिए क्या कदम उठाने पड़ेंगे?
उत्तर – सरकार को अधिपूर्ति (extra supply) को खरीदना पड़ेगा ताकि किसानों को नुकसान न हो और बाज़ार में कीमत तय सीमा से नीचे न गिरे।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक बाज़ार में, 1 किलो सेब की कीमत ₹100 पर, 200 किलो सेब की माँग है और 150 किलो सेब की पूर्ति है। इस स्थिति को पहचानिए।

› सबसे पहले हम माँग और पूर्ति की मात्राओं को देखेंगे।

› माँग = 200 किलो

› पूर्ति = 150 किलो

› अब हम तुलना करेंगे: क्या माँग पूर्ति से ज़्यादा है, या पूर्ति माँग से ज़्यादा है, या दोनों बराबर हैं?

› यहाँ, 200 किलो (माँग) > 150 किलो (पूर्ति)।

› चूंकि माँग पूर्ति से ज़्यादा है, तो यह 'अधिमाँग' की स्थिति है।

उत्तर – यह अधिमाँग की स्थिति है।

उदाहरण 2. मान लीजिए एक बाज़ार में माँग वक्र qD = 200 - P है और पूर्ति वक्र qS = 120 + P है। संतुलन कीमत (P*) और संतुलन मात्रा (Q*) ज्ञात करें।

› बाज़ार संतुलन के लिए, माँग (qD) और पूर्ति (qS) बराबर होती हैं: qD = qS

› समीकरणों को बराबर रखें: 200 - P = 120 + P

› P वाले पदों को एक तरफ और संख्या वाले पदों को दूसरी तरफ ले जाएं: 200 - 120 = P + P

› हल करें: 80 = 2P

› P के लिए हल करें: P* = 80 / 2 = 40 रुपये (यह संतुलन कीमत है)

› संतुलन कीमत (P*) को किसी भी एक समीकरण में रखकर संतुलन मात्रा (Q*) ज्ञात करें। मान लीजिए माँग वक्र में रखते हैं: qD = 200 - 40

› संतुलन मात्रा (Q*) = 160 इकाइयाँ

उत्तर – संतुलन कीमत (P*) = 40 रुपये, संतुलन मात्रा (Q*) = 160 इकाइयाँ।

उदाहरण 3. मान लीजिए, बाज़ार में एक सामान्य वस्तु, जैसे 'कुर्ते' का संतुलन E पर है, जहाँ संतुलन कीमत ₹500 और संतुलन मात्रा 100 इकाइयाँ हैं। अचानक लोगों की आय बढ़ जाती है। इसका संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? (पूर्ति वक्र स्थिर है)

› 1. सबसे पहले, हमें यह पहचानना है कि आय बढ़ने से माँग बढ़ेगी या घटेगी। चूंकि 'कुर्ता' एक सामान्य वस्तु है, आय बढ़ने से इसकी माँग बढ़ेगी।

› 2. माँग बढ़ने का मतलब है कि माँग वक्र दाहिनी ओर खिसक जाएगा। मान लो, यह DD0 से DD2 हो जाता है।

› 3. पूर्ति वक्र (SS0) अपनी जगह पर स्थिर रहेगा, क्योंकि फर्मों की संख्या स्थिर है और उत्पादन लागत में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

› 4. अब, नए माँग वक्र DD2 और पुराने पूर्ति वक्र SS0 का नया प्रतिच्छेदन बिंदु खोजो। यह नया संतुलन बिंदु (मान लो G) पुराने संतुलन बिंदु (E) के दाहिनी ओर और ऊपर होगा।

› 5. इस नए संतुलन बिंदु G पर, हम देखेंगे कि संतुलन कीमत (P2) पुरानी कीमत (P0 = ₹500) से ज़्यादा होगी।

› 6. और संतुलन मात्रा (Q2) भी पुरानी मात्रा (Q0 = 100 इकाइयाँ) से ज़्यादा होगी।

उत्तर – आय बढ़ने के कारण कुर्ते की माँग बढ़ेगी, जिससे माँग वक्र दाहिनी ओर खिसकेगा। परिणामस्वरूप, संतुलन कीमत और संतुलन मात्रा दोनों बढ़ जाएंगी।

उदाहरण 4. मान लीजिए बाज़ार में मोबाइल फोन की संतुलन कीमत 10,000 रुपये है और संतुलन मात्रा 1000 यूनिट है। अगर मोबाइल फोन बनाने में लगने वाले पार्ट्स अचानक बहुत सस्ते हो जाएँ तो संतुलन कीमत और मात्रा पर क्या असर पड़ेगा?

› पहला कदम: सोचना है कि पार्ट्स सस्ते होने से क्या होगा? जब पार्ट्स सस्ते होंगे, तो कंपनियों को मोबाइल बनाना सस्ता पड़ेगा।

› दूसरा कदम: अगर बनाना सस्ता पड़ेगा, तो कंपनियाँ ज़्यादा मोबाइल बनाना और बेचना चाहेंगी। यानी बाज़ार में 'पूर्ति' बढ़ जाएगी।

› तीसरा कदम: पूर्ति बढ़ने से पूर्ति वक्र 'दाएँ' खिसक जाएगा।

› चौथा कदम: जब पूर्ति वक्र दाएँ खिसकेगा (माँग वक्र वही रहेगा), तो नया संतुलन बिंदु कम कीमत और ज़्यादा मात्रा

पर होगा।

› निष्कर्ष: मोबाइल फोन की संतुलन कीमत 'घट' जाएगी और संतुलन मात्रा 'बढ़' जाएगी।

उत्तर – मोबाइल फोन की संतुलन कीमत कम हो जाएगी और संतुलन मात्रा बढ़ जाएगी।

उदाहरण 5. मान लीजिए बाज़ार में एक नया गेम लॉन्च हुआ है। इसकी बहुत ज़्यादा डिमांड है (माँग दायीं ओर खिसकती है) और साथ ही, इसे बनाने वाली कंपनी ने एक नई तकनीक का इस्तेमाल किया है जिससे वह बहुत तेज़ी से और ज़्यादा गेम बना पा रही है (पूर्ति भी दायीं ओर खिसकती है)। बताओ संतुलन कीमत और मात्रा पर क्या असर पड़ेगा?

› पहला कदम: दोनों ग्राफ (माँग और पूर्ति) को एक ही रेखाचित्र पर बनाओ।

› दूसरा कदम: अब दिखाओ कि माँग वक्र (DD) दायीं ओर शिफ्ट होकर D'D' हो गया।

› तीसरा कदम: उसी समय, पूर्ति वक्र (SS) भी दायीं ओर शिफ्ट होकर S'S' हो गया।

› चौथा कदम: नया संतुलन बिंदु देखो जहाँ D'D' और S'S' एक-दूसरे को काट रहे हैं।

› पांचवा कदम: अगर माँग में ज़्यादा वृद्धि हुई है तो कीमत बढ़ेगी, अगर पूर्ति में ज़्यादा वृद्धि हुई है तो कीमत घटेगी, और अगर दोनों में बराबर वृद्धि हुई तो कीमत वही रहेगी।

› छठा कदम: संतुलन मात्रा निश्चित रूप से बढ़ जाएगी क्योंकि दोनों वक्र दायीं ओर खिसके हैं।

उत्तर – संतुलन मात्रा निश्चित रूप से बढ़ जाएगी। संतुलन कीमत बढ़ सकती है, घट सकती है, या अपरिवर्तित रह सकती है - यह इस बात पर निर्भर करेगा कि माँग में वृद्धि ज़्यादा हुई या पूर्ति में वृद्धि ज़्यादा हुई।

उदाहरण 6. मान लीजिए एक गाँव में नई सड़क बन रही है। मज़दूरों की माँग (DL) समीकरण है: DL = 100 - 2W और मज़दूरों की पूर्ति (SL) समीकरण है: SL = 3W, जहाँ W मजदूरी दर है। संतुलन मजदूरी दर क्या होगी?

› संतुलन में, श्रम की माँग (DL) और श्रम की पूर्ति (SL) बराबर होती है।

› DL = SL

› 100 - 2W = 3W

› 100 = 3W + 2W

› 100 = 5W

› W = 100 / 5

› W = 20

उत्तर – संतुलन मजदूरी दर ₹20 प्रति दिन होगी।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक बाज़ार में फर्मों को प्रवेश और बहिर्गमन की पूरी आज़ादी है। यदि एक फर्म की न्यूनतम औसत लागत (Minimum Average Cost) ₹25 है, तो संतुलन कीमत क्या होगी?

› हमें यह याद रखना है कि 'निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन' वाले बाज़ार में, फर्म सिर्फ सामान्य लाभ अर्जित करती हैं।

› और सामान्य लाभ की स्थिति तब आती है जब बाज़ार कीमत फर्म की न्यूनतम औसत लागत के बराबर हो जाती है।

› समस्या में, हमें न्यूनतम औसत लागत ₹25 दी गई है।

› तो, संतुलन कीमत भी न्यूनतम औसत लागत के बराबर होगी।

उत्तर – संतुलन कीमत = ₹25

उदाहरण 8. मान लीजिए एक बाज़ार में पेन की माँग अचानक से बढ़ जाती है और नई पेन बनाने वाली फ़र्में आसानी से बाज़ार में प्रवेश कर सकती हैं। इस स्थिति में संतुलन कीमत, संतुलन मात्रा और बाज़ार में फ़र्मों की संख्या पर क्या असर पड़ेगा?

› पहला कदम: जब पेन की माँग बढ़ती है, तो माँग वक्र दायीं ओर खिसकता है। इससे शुरुआती तौर पर संतुलन कीमत और संतुलन मात्रा दोनों बढ़ जाती हैं।

› दूसरा कदम: बढ़ी हुई कीमत पर, मौजूदा फ़र्मों को ज़्यादा मुनाफ़ा होने लगता है। क्योंकि बाज़ार में 'निर्बाध प्रवेश' है, तो मुनाफ़े के लालच में नई फ़र्में बाज़ार में प्रवेश करती हैं।

› तीसरा कदम: जब नई फ़र्में बाज़ार में आती हैं, तो कुल बाज़ार पूर्ति बढ़ जाती है, जिससे पूर्ति वक्र दायीं ओर खिसकता है।

› चौथा कदम: बढ़ी हुई पूर्ति के कारण संतुलन कीमत धीरे-धीरे वापस अपनी प्रारंभिक स्तर पर आ जाती है।

› पाँचवाँ कदम: अंतिम संतुलन पर, कीमत लगभग उतनी ही रहती है जितनी पहले थी, लेकिन बाज़ार में कुल मात्रा (बिक्री) बढ़ जाती है और फ़र्मों की संख्या भी बढ़ जाती है।

उत्तर – माँग में वृद्धि के कारण, संतुलन कीमत प्रारंभिक स्तर पर वापस आ जाएगी, संतुलन मात्रा बढ़ जाएगी, और बाज़ार में फ़र्मों की संख्या भी बढ़ जाएगी।

उदाहरण 9. मान लीजिए गेहूँ की बाज़ार संतुलन कीमत 30 रुपये प्रति किलो है। सरकार ने इसे घटाकर 20 रुपये प्रति किलो 'उच्चतम निर्धारित कीमत' तय कर दी। अगर इस कीमत पर माँग 1000 किलो है और पूर्ति केवल 600 किलो है, तो क्या स्थिति बनेगी?

› पहला कदम: हमें समझना है कि सरकार ने जो कीमत (20 रुपये) तय की है, वह बाज़ार संतुलन कीमत (30 रुपये) से कम है।

› दूसरा कदम: जब कीमत कम होती है, तो माँग ज़्यादा हो जाती है (1000 किलो)।

› तीसरा कदम: वहीं, कम कीमत पर उत्पादक को फ़ायदा कम होता है, इसलिए वो कम गेहूँ बेचेंगे, यानी पूर्ति कम होगी (600 किलो)।

› चौथा कदम: माँग (1000 किलो) पूर्ति (600 किलो) से ज़्यादा है। 1000 - 600 = 400 किलो गेहूँ की कमी है।

› पांचवां कदम: इस कमी को 'अधिमाँग' (Excess Demand) कहते हैं। इससे कालाबाज़ारी की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

उत्तर – इस स्थिति में 400 किलो गेहूँ की अधिमाँग होगी, जिससे राशनिंग या कालाबाज़ारी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

उदाहरण 10. मान लीजिए एक वस्तु की बाज़ार संतुलन कीमत ₹10 है और संतुलन मात्रा 100 इकाइयाँ हैं। सरकार ने 'निम्नतम निर्धारित कीमत' ₹12 तय कर दी है। इस कीमत पर उपभोक्ता 80 इकाइयाँ खरीदना चाहते हैं, लेकिन उत्पादक 120 इकाइयाँ बेचना चाहते हैं। बाज़ार पर इसका क्या प्रभाव होगा?

› सबसे पहले, हमें देखना होगा कि सरकारी कीमत (₹12) बाज़ार संतुलन कीमत (₹10) से 'ज़्यादा' है, जो निम्नतम निर्धारित कीमत की शर्त है।

› अब, सरकार द्वारा तय की गई ₹12 की कीमत पर, उपभोक्ता केवल 80 इकाइयाँ ही खरीदना चाहते हैं (मांग)।

› लेकिन, इसी ₹12 की कीमत पर, उत्पादक 120 इकाइयाँ बेचना चाहते हैं (पूर्ति)।

› तो, बाज़ार में मांग (80) से ज़्यादा पूर्ति (120) है। इसका मतलब है, 120 - 80 = 40 इकाइयों की 'अधिपूर्ति' हो गई है।

› इस अधिपूर्ति को खरीदने के लिए, सरकार को बाज़ार में हस्तक्षेप करना पड़ेगा, ताकि दाम ₹12 से नीचे न गिरें और उत्पादकों को नुकसान न हो।

उत्तर – इस स्थिति में, 40 इकाइयों की अधिपूर्ति (Surplus) होगी। सरकार को इस अतिरिक्त उत्पादन को खरीदना पड़ेगा ताकि उत्पादकों को नुकसान न हो और तय कीमत बनी रहे।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• संतुलन, अधिमाँग और अधिपूर्ति की परिभाषाएँ और उनके उदाहरण अक्सर सीधे प्रश्न के रूप में या बहुविकल्पीय प्रश्नों में आते हैं। इन अवधारणाओं को अच्छे से समझ लो।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर रेखाचित्र के साथ संतुलन कीमत और मात्रा को दर्शाने के लिए प्रश्न पूछे जाते हैं। आपको माँग और पूर्ति वक्रों को ग्राफ पर सही ढंग से बनाना और संतुलन बिंदु को चिह्नित करना आना चाहिए।

• रेखाचित्र (diagram) बनाकर प्रभाव को दर्शाना बहुत महत्वपूर्ण है। पूर्ति वक्र का खिसकना (shift) साफ दिखना चाहिए और नया संतुलन बिंदु (new equilibrium point) सही ढंग से चिह्नित करें। यह प्रश्न अक्सर 5 या 6 अंक में आता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर रेखाचित्र बनाकर स्थितियों को समझाने वाले प्रश्न आते हैं। हर स्थिति में संतुलन कीमत और मात्रा पर पड़ने वाले असर को ध्यान से समझें और उसका रेखाचित्र बनाना सीखें।

• यह कॉन्सेप्ट बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर आधारित दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (long answer questions) आते हैं, जिसमें आपको ग्राफ़ बनाकर पूरे प्रभाव को समझाना होता है। इसे अच्छे से अभ्यास करना, बच्चों!
• रेखाचित्र (diagram) बनाकर अधिमाँग की स्थिति को समझाना बोर्ड परीक्षाओं में बहुत महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान से समझना और अभ्यास करना।

एक नज़र में रिवीज़न

› संतुलन: माँग = पूर्ति; अधिमाँग: माँग > पूर्ति; अधिपूर्ति: पूर्ति > माँग।
› स्थिर फर्मों में संतुलन: माँग = पूर्ति, वक्रों का प्रतिच्छेदन।
› पूर्ति बढ़ने से P_*, Q_*; पूर्ति घटने से P_*, Q_* (फर्म स्थिर)
› माँग-पूर्ति का एक साथ बदलाव: कीमत/मात्रा पर असर बदलाव की तीव्रता पर निर्भर।
› निर्बाध प्रवेश/निकास: माँग बदलाव से कीमत स्थिर, मात्रा और फ़र्में बदलती हैं।
› सरकार द्वारा तय अधिकतम मूल्य सीमा, बाज़ार कीमत से कम, अधिमाँग व कालाबाज़ारी संभव।